Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

गृह प्रबंधन शिक्षा से महिलाओं की निर्णय-क्षमता में वृद्धि का अध्ययन (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

डॉ. ज्योति सिंह*

* अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं को पारिवारिक संसाधनों- जैसे समय, धन, ऊर्जा एवं मानव संसाधन के प्रभावी नियोजन, संगठन और नियंत्रण के लिए प्रशिक्षित करती है। भारतीय समाज में महिलाओं की निर्णय-क्षमता लंबे समय तक सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाओं से प्रभावित रही है। किंतु गृह प्रबंधन शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ पारिवारिक एवं आर्थिक निर्णय-निर्माण में अधिक सक्रिय, आत्मनिर्भर एवं विवेकशील बन रही हैं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं की निर्णय-क्षमता को किस प्रकार प्रभावित करती है। यह अध्ययन मध्यप्रदेश के सतना जिले की ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं पर आधारित है। सर्वेक्षण विधि द्वारा संकलित आँकड़ों का विश्लेषण तालिकाओं एवं प्रतिशत विधि के माध्यम से किया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाओं में निर्णय-क्षमता, आत्मविश्वास एवं संसाधन-प्रबंधन दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

शब्द कुंजी – गृह प्रबंधन शिक्षा, निर्णय-क्षमता, महिलाएँ, संसाधन प्रबंधन, समाजशास्त्रीय अध्ययन।

प्रस्तावना – निर्णय-निर्माण किसी भी व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक एवं पारिवारिक जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है। परिवार की स्थिरता, प्रगति एवं संतुलन इस बात पर निर्भर करता है कि संसाधनों से संबंधित निर्णय कितने विवेकपूर्ण ढंग से लिए जाते हैं। भारतीय समाज में परंपरागत रूप से निर्णय-निर्माण की शक्ति पुरुषों के हाथों में केंद्रित रही है, जबकि महिलाएँ निर्णयों के क्रियान्वयन तक सीमित रखी गईं। परंतु बदलते सामाजिक-आर्थिक परिवेश में महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन आया है और इस परिवर्तन में गृह प्रबंधन शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं को समय प्रबंधन, बजट निर्माण, संसाधन संरक्षण, उपभोक्ता शिक्षा एवं समस्या-समाधान कौशल सिखाती है। यह शिक्षा महिलाओं को केवल गृहिणी नहीं, बल्कि कुशल प्रबंधक के रूप में विकसित करती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आत्मनिर्भरता एवं निर्णय-क्षमता को सशक्त बनाती है।

आधुनिक युग में शिक्षा को सशक्तिकरण का प्रमुख साधन माना जाता है। गृह प्रबंधन शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ पारिवारिक निर्णय-निर्माण में सक्रिय सहभागिता करने लगती हैं चाहे वह बच्चों की शिक्षा हो, पारिवारिक बजट हो, स्वास्थ्य संबंधी निर्णय हों या बचत एवं निवेश से जुड़े निर्णय हों। यही कारण है कि गृह प्रबंधन शिक्षा और महिलाओं की निर्णय-क्षमता के बीच संबंध का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य – महिलाओं की निर्णय-क्षमता का सीधा संबंध परिवार की गुणवत्ता-पूर्ण जीवन शैली से जुड़ा हुआ है। जब महिलाएँ शिक्षित एवं निर्णय-सक्षम होती हैं, तो परिवार के संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है। इसके बावजूद भारतीय समाज में महिलाओं की निर्णय-क्षमता को अब भी सीमित रूप में देखा जाता है। इस अध्ययन की आवश्यकता निम्न कारणों से है-

1. गृह प्रबंधन शिक्षा के प्रभाव का वैज्ञानिक मूल्यांकन करना।
2. महिलाओं की निर्णय-क्षमता में शिक्षा की भूमिका को स्पष्ट करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के बीच निर्णय-क्षमता में अंतर का अध्ययन करना।
4. महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में गृह प्रबंधन शिक्षा की उपयोगिता को रेखांकित करना।
5. नीति-निर्माण एवं पाठ्यक्रम विकास हेतु सुझाव प्रदान करना।

यह अध्ययन गृह विज्ञान एवं समाजशास्त्र दोनों विषयों के लिए अकादमिक रूप से उपयोगी है।

पूर्व शोधों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा महिलाओं की निर्णय-क्षमता को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है। शर्मा (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाएँ पारिवारिक बजट एवं संसाधन नियोजन में अधिक दक्ष होती हैं। वर्मा (2018) के अनुसार गृह विज्ञान शिक्षा महिलाओं में आत्मविश्वास एवं समस्या-समाधान क्षमता को विकसित करती है। कुमार एवं सिंह (2019) ने ग्रामीण महिलाओं पर किए गए अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि शिक्षित महिलाएँ पारिवारिक निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाती हैं। पटेल (2020) ने यह स्पष्ट किया कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं को आर्थिक निर्णय-निर्माण के लिए सक्षम बनाती है। देवी (2021) के अध्ययन में यह सामने आया कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं की सामाजिक स्थिति एवं निर्णय-स्वतंत्रता में वृद्धि करती है। पूर्व अध्ययनों से यह स्पष्ट है कि गृह प्रबंधन शिक्षा और निर्णय-क्षमता के बीच सकारात्मक संबंध है, किंतु क्षेत्रीय एवं तुलनात्मक अध्ययन सीमित हैं। प्रस्तुत शोध इसी शोध-रिक्तता को भरने का प्रयास करता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. गृह प्रबंधन शिक्षा का महिलाओं की निर्णय-क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शिक्षित एवं अशिक्षित महिलाओं की निर्णय-क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं में निर्णय-क्षमता के स्तर का विश्लेषण करना।
4. गृह प्रबंधन शिक्षा और आत्मनिर्भरता के बीच संबंध का अध्ययन करना।
5. नीति-निर्माण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पनाएँ :

1. गृह प्रबंधन शिक्षा से महिलाओं की निर्णय-क्षमता में वृद्धि होती है।
2. गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाएँ पारिवारिक निर्णय-निर्माण में अधिक सहभागी होती हैं।
3. शहरी महिलाएँ ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक निर्णय-सक्षम होती हैं।
4. गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाती है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोध में गृह प्रबंधन शिक्षा से महिलाओं की निर्णय-क्षमता में होने वाली वृद्धि का अध्ययन वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ढंग से किया गया है। शोध की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने हेतु उपयुक्त शोध प्रविधि का चयन किया गया है।

शोध का प्रकार – यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। वर्णनात्मक इसलिए कि इसमें महिलाओं की निर्णय-क्षमता की वर्तमान स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा विश्लेषणात्मक इसलिए कि गृह प्रबंधन शिक्षा के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शोध विधि – अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं से संबंधित सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक जानकारियाँ प्राप्त की गईं।

अध्ययन की इकाई – इस शोध की इकाई विवाहित महिलाएँ हैं, जो परिवार में निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई हैं।

नमूना चयन विधि – नमूना चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि अपनाई गई। इस विधि के अंतर्गत उन महिलाओं का चयन किया गया जिनमें-

- कुछ महिलाएँ गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त थीं।
- कुछ महिलाएँ गृह प्रबंधन शिक्षा से वंचित थीं।

नमूना आकार – कुल 120 महिलाओं का चयन किया गया-

- 60 गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाएँ
- 60 गृह प्रबंधन शिक्षा अप्राप्त महिलाएँ

इनमें ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों की महिलाएँ सम्मिलित हैं।

डेटा संग्रह के उपकरण – डेटा संग्रह के लिए निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया-

1. संरचित प्रश्नावली
2. व्यक्तिगत साक्षात्कार

प्रश्नावली में निर्णय-निर्माण, बजट नियंत्रण, समय प्रबंधन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी निर्णयों से जुड़े प्रश्न सम्मिलित थे।

डेटा विश्लेषण की विधि – संग्रहित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि, तालिकीय प्रस्तुतीकरण तथा तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से किया गया।

अध्ययन क्षेत्र – सतना जिला

प्रस्तुत शोध के लिए मध्यप्रदेश के सतना जिले का चयन किया गया। सतना जिला सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से विविधताओं से परिपूर्ण है। यहाँ ग्रामीण एवं शहरी दोनों प्रकार की जनसंख्या निवास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक सोच एवं संयुक्त परिवार प्रणाली अधिक प्रचलित है, जहाँ महिलाओं की निर्णय-क्षमता सीमित पाई जाती है। इसके विपरीत शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, रोजगार एवं आधुनिक सोच के कारण महिलाओं की निर्णय-क्षमता अपेक्षाकृत अधिक पाई जाती है। यही विविधता इस जिले को अध्ययन हेतु उपयुक्त बनाती है।

उत्तारदाताओं की सामाजिक-आर्थिक प्रोफाइल

तालिका – 1: आयु वर्ग के अनुसार वितरण

क्रं.	आयु वर्ग (वर्ष)	संख्या	प्रतिशत
1	20-30	28	23.3 %
2	31-40	44	36.7 %
3	31-40	44	36.7 %
4	41-50	32	26.7 %
5	51 एवं अधिक	16	13.3 %
	कुल	120	100 %

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकांश महिलाएँ 31-40 वर्ष आयु वर्ग की हैं, जो पारिवारिक निर्णय-निर्माण में सबसे सक्रिय मानी जाती हैं।

तालिका – 2: शैक्षिक स्थिति

क्रं.	शिक्षा स्तर	संख्या	प्रतिशत
1	निरक्षर	20	16.7 %
2	प्राथमिक	30	25 %
3	माध्यमिक	38	31.7 %
4	उच्च शिक्षा	32	26.6 %

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह परिलक्षित होता है कि लगभग 58 % महिलाएँ माध्यमिक या उससे अधिक शिक्षा प्राप्त हैं, जिससे निर्णय-क्षमता में वृद्धि की संभावना अधिक होती है।

तालिका – 3: गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त स्थिति

क्रं.	स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	प्राप्त	60	50 %
2	अप्राप्त	60	50 %

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से पता चलता है कि अध्ययन को तुलनात्मक रूप से संतुलित रखने हेतु दोनों वर्गों को समान रूप से शामिल किया गया।

निर्णय-क्षमता के प्रमुख क्षेत्र – निर्णय-क्षमता का मूल्यांकन निम्न क्षेत्रों में किया गया-

- पारिवारिक बजट
- बच्चों की शिक्षा
- स्वास्थ्य संबंधी निर्णय
- घरेलू संसाधनों का उपयोग
- बचत एवं निवेश

गृह प्रबंधन शिक्षा एवं महिलाओं की निर्णय-क्षमतारू विश्लेषणात्मक अध्ययन – गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं को केवल घरेलू कार्यों का ज्ञान नहीं देती, बल्कि उन्हें तार्किक सोच, समस्या-समाधान, संसाधन नियोजन

एवं निर्णय लेने की क्षमता भी प्रदान करती है। निर्णय-क्षमता वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति उपलब्ध विकल्पों में से सर्वोत्तम विकल्प का चयन करता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं की निर्णय-क्षमता को किस सीमा तक प्रभावित करती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से निर्णय-निर्माण शक्ति सामाजिक संरचना, शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता एवं पारिवारिक वातावरण से प्रभावित होती है। गृह प्रबंधन शिक्षा इन सभी आयामों को सशक्त बनाती है, जिससे महिलाओं की भूमिका पारिवारिक निर्णयों में सुदृढ़ होती है।

पारिवारिक बजट से संबंधित निर्णयों में महिलाओं की भूमिका

तालिका – 4: पारिवारिक बजट निर्णय में सहभागिता

क्रं.	गृह प्रबंधन शिक्षा	उच्च सहभागिता	मध्यम सहभागिता	निम्न सहभागिता
1	प्राप्त महिलाएँ	68 %	22 %	10 %
2	अप्राप्त महिलाएँ	32 %	40 %	28 %

तालिका से स्पष्ट है कि गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाओं में 68 % उच्च स्तर की निर्णय-क्षमता पाई गई, जबकि शिक्षा अप्राप्त महिलाओं में यह प्रतिशत केवल 32 % है। इससे यह सिद्ध होता है कि गृह प्रबंधन शिक्षा बजट निर्माण एवं व्यय नियंत्रण में महिलाओं को अधिक सक्षम बनाती है।

बच्चों की शिक्षा संबंधी निर्णयों में भूमिका

तालिका – 5: बच्चों की शिक्षा से जुड़े निर्णय

क्रं.	निर्णय स्तर	शिक्षा प्राप्त	शिक्षा अप्राप्त
1	उच्च	72 %	35 %
2	मध्यम	20 %	40 %
3	निम्न	8 %	25 %

उपरोक्त तालिका से दृष्टांत है कि गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाएँ बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों-जैसे स्कूल चयन, खर्च नियोजन एवं शैक्षणिक गतिविधियों में अधिक सक्रिय पाई गईं। यह शिक्षा महिलाओं को भविष्य-उन्मुख सोच विकसित करने में सहायक होती है।

स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में महिलाओं की भूमिका

तालिका – 6: स्वास्थ्य निर्णय-निर्माण क्षमता

क्रं.	निर्णय स्तर	शिक्षा प्राप्त	शिक्षा अप्राप्त
1	उच्च	65 %	30 %
2	मध्यम	25 %	42 %
3	निम्न	10 %	28 %

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से पता चलता है कि स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों-जैसे पोषण, चिकित्सा परामर्श एवं स्वास्थ्य व्यय में गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाएँ अधिक जागरूक एवं निर्णायक पाई गईं। इससे परिवार के स्वास्थ्य स्तर में सुधार होता है।

समय एवं संसाधन उपयोग संबंधी निर्णय

तालिका – 7: समय प्रबंधन एवं संसाधन उपयोग

क्रं.	निर्णय दक्षता	शिक्षा प्राप्त	शिक्षा अप्राप्त
1	उच्च	70 %	34 %
2	मध्यम	22 %	41 %
3	निम्न	8 %	25 %

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं को समय का नियोजन, प्राथमिकता निर्धारण एवं संसाधनों के अधिकतम उपयोग हेतु प्रशिक्षित करती है। इसी कारण शिक्षा प्राप्त महिलाओं में निर्णय दक्षता अधिक पाई गई।

ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका – 8: क्षेत्र अनुसार निर्णय-क्षमता

क्रं.	क्षेत्र	उच्च	मध्यम	निम्न
1	ग्रामीण	66 %	26 %	8 %
2	शहरी	38 %	42 %	20 %

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से यह पता चलता है कि शहरी महिलाओं की निर्णय-क्षमता ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक पाई गई। इसका मुख्य कारण शिक्षा, सूचना एवं संसाधनों की बेहतर उपलब्धता है।

गृह प्रबंधन शिक्षा और आत्मविश्वास का संबंध – अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं में आत्मविश्वास को बढ़ाती है। आत्मविश्वास निर्णय-क्षमता का आधार है। शिक्षित महिलाएँ अपनी बात को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत करती हैं और पारिवारिक चर्चाओं में सक्रिय भागीदारी करती हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं की स्थिति (Status) एवं भूमिका (Role) में परिवर्तन लाती है। यह शिक्षा महिलाओं को आश्रित भूमिका से निर्णायक भूमिका की ओर ले जाती है। इससे पारिवारिक शक्ति-संतुलन में सकारात्मक परिवर्तन होता है। शोध अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष हैं :-

1. गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं की निर्णय-क्षमता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाती है।
2. शिक्षा प्राप्त महिलाएँ पारिवारिक निर्णयों में अधिक सहभागी होती हैं।
3. बजट, शिक्षा एवं स्वास्थ्य निर्णयों में शिक्षा का प्रभाव सर्वाधिक है।
4. शहरी महिलाएँ ग्रामीण महिलाओं की अपेक्षा अधिक निर्णय-सक्षम हैं।
5. गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं के आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ाती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम से यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं की निर्णय-क्षमता में महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक भूमिका निभाती है। अध्ययन के दौरान प्राप्त आँकड़ों एवं उनके विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख परिणाम सामने आए – गृह प्रबंधन शिक्षा प्राप्त महिलाएँ पारिवारिक निर्णयों में अधिक आत्मविश्वासी, तार्किक एवं सक्रिय पाई गईं। ये महिलाएँ बजट निर्माण, खर्च नियंत्रण, बचत योजना, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी निर्णय तथा समय व संसाधन प्रबंधन में अधिक दक्ष थीं। इसके विपरीत गृह प्रबंधन शिक्षा से वंचित महिलाएँ निर्णय-निर्माण में अपेक्षाकृत निर्भर एवं सीमित भूमिका निभाती दिखाई दीं।

शोध अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं में समस्या-समाधान क्षमता को विकसित करती है, जिससे वे पारिवारिक परिस्थितियों के अनुसार उचित निर्णय लेने में सक्षम बनती हैं। ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं की तुलना में यह तथ्य सामने आया कि शिक्षा के अवसरों की उपलब्धता के कारण शहरी महिलाओं की निर्णय-क्षमता अधिक विकसित है, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में भी गृह प्रबंधन शिक्षा के सकारात्मक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दिए। इस प्रकार शोध परिणाम यह संकेत करते हैं कि गृह प्रबंधन शिक्षा केवल घरेलू दक्षता नहीं, बल्कि सशक्तिकरण का प्रभावी माध्यम है।

प्रस्तुत शोध 'गृह प्रबंधन शिक्षा से महिलाओं की निर्णय–क्षमता में वृद्धि का अध्ययन' के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं को पारिवारिक जीवन में एक सशक्त एवं निर्णायक भूमिका प्रदान करती है। यह शिक्षा महिलाओं को पारंपरिक सीमित भूमिका से बाहर निकालकर उन्हें परिवार के नीति–निर्धारण में सहभागी बनाती है। निर्णय–क्षमता का विकास महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आत्मसम्मान एवं पारिवारिक प्रभावशीलता को बढ़ाता है। गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं को संसाधनों के वैज्ञानिक उपयोग, प्राथमिकता निर्धारण तथा भविष्य–उन्मुख सोच प्रदान करती है। इसके परिणामस्वरूप परिवार की आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य स्तर एवं शैक्षणिक वातावरण में सुधार होता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह शिक्षा लैंगिक समानता को बढ़ावा देती है तथा पारिवारिक सत्ता–संरचना में संतुलन स्थापित करती है। अत: यह कहा जा सकता है कि गृह प्रबंधन शिक्षा महिलाओं के सर्वांगीण विकास एवं समाज के सतत विकास का एक सशक्त साधन है।

सुझाव – अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैंकृ

1. विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर गृह प्रबंधन शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिए।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए विशेष गृह प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
3. महिला स्व–सहायता समूहों के माध्यम से गृह प्रबंधन शिक्षा का प्रसार किया जाए।
4. गृह प्रबंधन शिक्षा को महिला सशक्तिकरण योजनाओं से जोड़ा जाए।
5. मीडिया एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से गृह प्रबंधन शिक्षा के महत्व का प्रचार किया जाए।
6. उच्च शिक्षा में गृह प्रबंधन विषय को रोजगार–उन्मुख बनाया जाए।

भविष्य के शोध की संभावनाएँ

1. गृह प्रबंधन शिक्षा और महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर अध्ययन।
2. कार्यरत एवं गैर–कार्यरत महिलाओं की निर्णय–क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन।
3. गृह प्रबंधन शिक्षा का बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव।
4. डिजिटल गृह प्रबंधन शिक्षा एवं निर्णय–क्षमता का अध्ययन।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. Desai, N. (2010). Women and Society in India. New Delhi: National Book Trust.
2. Gupta, S. (2014). Home Management and Family Resource Development. New Delhi: Pearson.
3. Kaur, P. (2016). Women empowerment through education. Indian Journal of Social Research, 57(2), 211-225.
4. Kishor, S., & Gupta, K. (2009). Gender equality and women's empowerment. International Journal of Sociology, 39(1), 45-63.
5. Lal, R. (2015). Sociology of Family. Jaipur: Rawat Publications.
6. Moser, C. (1993). Gender Planning and Development. London: Routledge.
7. NCERT. (2018). Home Science Curriculum Framework. New Delhi.
8. Oakley, A. (2005). The Sociology of Housework. Oxford: Blackwell.
9. Patel, V. (2017). Women's role in family decision making. Journal of Family Studies, 23(3), 356-370.
10. Rani, S. (2019). Home science education and women empowerment. International Journal of Home Science, 5(1), 45-50.
11. Sharma, R. (2013). Women Education and Development. Delhi: Kanishka Publishers.
12. Singh, A. (2016). Family resource management and decision making. Asian Journal of Social Science, 8(2), 101-112.
13. UNDP. (2020). Gender Equality and Women Empowerment. New York.
14. UNICEF. (2019). Women and Education in Developing Countries.
15. World Bank. (2018). Education and Empowerment of Women. Washington DC.

****